मौर्य साम्राज्य के पतन का कारण

Date :
Page :

प्राचीन भारतीय राजनीतिक इतिहास राजवंशो एवं साम्राज्यो के उत्थान-पतन की एक रहस्यात्मक गाथा है। मौर्य साम्राज्य का पतन भी इस राजनीतिक प्रदत्त नियम का अपवाद नहीं। फिर भी मौर्य साम्राज्य का पतन अपेक्षाकृत शीघ्र हुआ। जिस वंश मे चंद्रगुप्त मौर्य और अशोक जैसे विख्यात सम्राट हुये, जिसे कौटिल्य जैसा दूरदर्शी एवं सुदृढ़ शासन व्यवस्था ने शक्तिशाली बनाया। वैसे साम्राज्य का इतना शीघ्र धराशायी होना विस्मित सा कर देता है।

यह एक स्वाभाविक प्रश्न है कि अशोक के निधन के पश्चात् इतनी शीघ्रता से इस साम्राज्य का पतन क्यों हुआ? मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों पर प्रकाश डालते हुये डा० रोमिला थापर ने विचार व्यक्त किया है कि मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण सैनिको की अकर्मण्यता, ब्राह्मणों का असंतोष, जनसाधारण के विद्रोह या आर्थिक दबाव के आधार पर इसके कारण अधिक मौलिक थे और इनसे कहीं अधिक मौर्य जीवन विस्तृत आधारों से संबंधित थे। डा० सुखर्जी ने मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों की चर्चा करते हुये लिखा है कि स्थानीय स्वतंत्रता की भावना आवागमन के साधन का अभाव प्रांतीय शासको के अत्याचार और विद्रोही नीति महल के षड्यंत्र तथा सरकारी अधिकारियों की धोखेबाजी इसके पतन के प्रमुख कारण थे।

पंडित हरप्रसाद शास्त्री के अनुसार अशोक के ब्राह्मण विरोधी नीति ने मौर्य साम्राज्य की नीव कमजोर कर दी। किन्तु राय चौधरी ने इस मत का खण्डन किया है। डा० विमल चन्द्र पाण्डेय ने लिखा है कि अन्य राजवंशों की तरह मौर्य वंश का भी

Scanned with CamScanner

पतन न तो आकस्मिक था और न ही एक कारण से उद्भुत था। बहुत दिनों से अनेकानेक कारण मौर्य साम्राज्य को निर्बल बनाने में सहयोग दे रहे थे। फलतः एक दिन अनेक सम्मिलित आघातों से जर्जरित हुआ मौर्य साम्राज्य धराशायी हो गया।

मौर्य साम्राज्य के पतन के कई कारण हैं। इस साम्राज्य के पतन का सबसे पहला कारण अकेन्द्रीय भाव की प्रवृति है। भारतीय इतिहास में केन्द्रीय भाव और अकेन्द्रीय भाव की प्रवृति में सदा संघर्ष होता रहा। अशोक के समय तक इस विशाल साम्राज्य के ऊपर एक सुदृढ़ शासन सत्ता का प्रभाव जमा रहा, किन्तु बाद में ज्योंही उसकी मृत्यु हुई साम्राज्य के विभिन्न भाग इससे पृथक होने लगे। सशक्त व सुदृढ़ शासन के अभाव में कश्मीर, गांधार, विदेह आदि राजाओ ने अपनी स्वतंत्र सत्ता घोषित कर दी। राजतरंगिनी से ज्ञात होता है कि अशोक की मृत्यु के बाद उसके एक पुत्र जलौक ने कश्मीर में अपनी स्वतंत्र सत्ता घोषित कर दी। इस तरह मौर्य साम्राज्य में निरन्तर ह्रास होता गया।

अशोक के उत्तराधिकारी के बाद मौर्य साम्राज्य की सत्ता उसके अयोग्य उत्तराधिकारी के हाथ में आ गई। इसी कारण वंश मात्र 48 वर्ष के उपरांत ही मगध की गद्दी पर एक नये वंश का उदय हुआ जो शुंग वंश के नाम से अभिज्ञात है।

साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण प्रांतीय शासको का प्रजा पर अत्याचार था। तक्षशिला के दूरस्थ प्रांतों में स्थानीय पदाधिकारी के उत्पीड़न के कारण निरंतर विद्रोह हुआ। दिव्यावदान के वितरण

Scanned with CamScanner

से भी उक्त बातो की पुष्टि होती है। गार्गी संहिता के अनुसार मौर्य सम्राट शालिसुक स्वयं अधार्मिक एवं अत्याचारी शासक था। उसने अपनी प्रजा को अत्यंत प्रताड़ित किया। वस्तुतः जनता का विश्वास मौर्यों के शासन सत्ता के प्रति न रहा तब पतन की प्रक्रिया का तीव्र होना असंगत प्रतीत नही होता है।

राज्यसभा में गुटबंदी भी मौर्य साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण है। मालविकाग्निमित्र से प्राप्त प्रसंग से ज्ञात होता है कि वृद्ध धर्मावलम्बि एवं ब्राह्मणों के काल में सत्ता में दो दल अपने महत्वो को स्थापित करने के लिये निरंन्तर खींचातानी कर रहे थे। जिसमे एक दल सेनापति का पक्षधर था तो दूसरा सचिव का। इन षड्यंत्रों ने गृह युद्ध को और भी ज्यादा प्रोत्साहित किया। स्पष्ट है कि राज्यसभा की गुटबंदियो ने राज्य सत्ता को अस्थिर, विवश और संकटग्रस्त कर दिया।

कुछ विद्वानों ने ब्राह्मण प्रतिक्रिया को ही मौर्य साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण मानते हैं। जिसमे हर प्रसाद शास्त्री का नाम उल्लेखनीय है। उनके अनुसार अशोक द्वारा राज्य में एक-सा न्याय विधान और दण्ड व्यवस्था स्थापित किये जाने से ब्राह्मणों को समाज में प्राप्त विशेषाधिकार समाप्त हो गया। अशोक द्वारा यज्ञों के निषेध तथा धम्म महामात्यो की नियुक्ति ने भी ब्राह्मणों को कुपित कर दिया, किन्तु अधिकांश विद्वानो ने इस मत का खण्डन किया है।

एतिहासिक तथ्यों से यह प्रमाणित होता है कि मौर्य शासक क्षत्रिय थे। अशोक धार्मिक सहिष्णु था। ब्राह्मण इतिहासकार कल्हण ने लिखा है कि अशोक तथा ब्राह्मण प्रजा में मैत्रीपूर्ण संबंध थे। डा० राय चौधरी

Scanned with CamScanner

ने भी लिखा है कि ब्राह्मण प्रतिक्रिया से मौर्य साम्राज्य के पतन का कोई संबंध नहीं था।

डा० कौशाम्बी के मतानुसार मौर्य साम्राज्य का पतन उसकी आर्थिक दुर्बलता के कारण हुआ। शासकों ने राजकोष की वृद्धि हेतु अनेक कर लगाये। चन्द्रगुप्त मौर्य ने अनेक युद्ध के उपरांत मौर्य साम्राज्य की नींव डाली। अशोक ने धर्मप्रचार और दान पर अत्यधिक खर्च किया। फलतः राजकोष रिक्त हो गया। राजकोष की रिक्तता पूर्ति हेतु कर लगाये जिससे प्रजा त्रस्त हुई और पतन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

रोमिला थापर के अनुसार प्रशासकीय संगठन एवं राष्ट्रीय भावना के अभाव से पतन संभव हुआ जबकि अन्य विद्वानों ने इस विचार का खण्डन किया है। डा० मजुमदार ने लिखा है कि - वह शक्ति जिससे सेल्यूकस के सैनिक जत्थों को पीछे भगा दिया था। वह बैक्ट्रिया के छोटे-छोटे राजाओं से देश की रक्षा करने में अयोग्य प्रमाणित हुआ।

इससे यह ज्ञात होता है कि मौर्य साम्राज्य के कर्मचारी अयोग्य और भ्रष्ट थे। मौर्यकाल में आवागमन के एवं संचार के साधनों के अभाव के कारण भी मौर्य साम्राज्य का पतन संभव हुआ। इसप्रकार अनेकानेक कारण मौर्य साम्राज्य के पतन में सहायक हुये।

Scanned with CamScanner